प्रेमचंद

की

लोकप्रिय कहानियाँ

प्रेमचंद

की

लोकप्रिय कहानियाँ

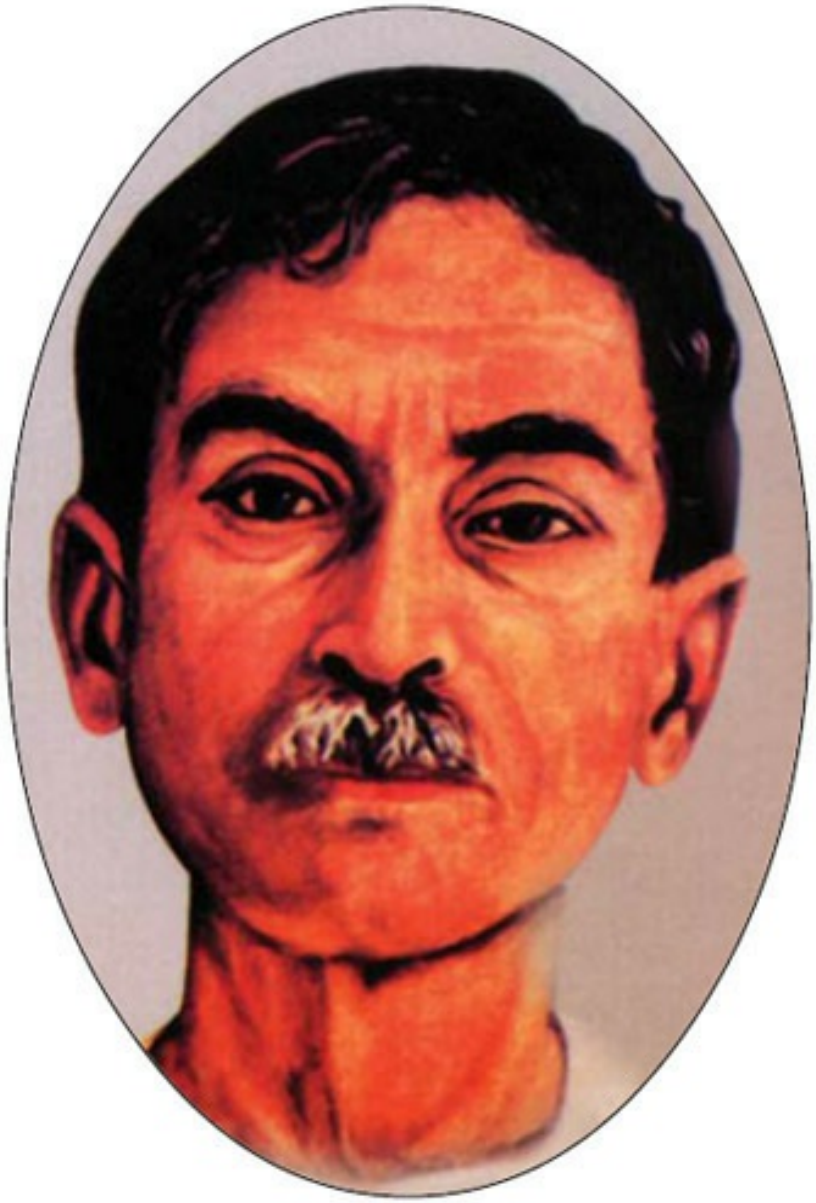

प्रेमचंद
की
लोकप्रिय कहानियाँ

प्रेमचंद

प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

This Book is requested from Request Hoarder

अनुक्रमणिका

1- लाग-डाट

2- रामलीला

3- कजाकी

4- गरीब की हाय

5- परीक्षा

6- क्रिकेट मैच

7- पंच-परमेश्वर

8- धोखा

9- भाड़े का टट्टू

10- जुगनू की चमक

11- सुजान भगत

12- ईदगाह

13- बेटों वाली विधवा

संपादकीय

This Book is requested from Request Hoarder

हिंदी साहित्य जगत् में मुंशी प्रेमचंद का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। इनका वास्तविक नाम धनपत राय था। इनका जन्म 31 जुलाई, 1880 को बनारस शहर से करीब चार मील दूर लमही गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम मुंशी अजायब लाल था, जो डाक मुंशी के पद पर थे। इनके मध्यमवर्गीय परिवार में साधारणतया खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने की तंगी तो न थी, परंतु इतना कभी न हो पाया कि इन्हें उच्च स्तर का खान-पान अथवा रहन-सहन मिल सके, इसी आर्थिक समस्या से मुंशी प्रेमचंद भी पूरी उम्र जूझते रहे। तंगी में ही उन्होंने इस नश्वर संसार को छोड़ा।

मातृत्व-स्नेह से वंचित हो चुके और पिता की देख-रेख से दूर रहने वाले बालक धनपत ने अपने लिए कुछ ऐसा रास्ता चुना, जिस पर आगे चलकर वे 'उपन्यास सम्राट्, महान कथाकार, कलम का सिपाही' जैसी उपाधियों से विभूषित हुए। उन्होंने बचपन से ही अपने समय की मशहूर और ऐयारी की पुस्तकें पढ़नी शुरू कर दीं। इन पुस्तकों में सबसे बढ़कर 'तिलिस्मी होशरुबा' थी। बारह-तेरह वर्ष की उम्र में उन्होंने अनेक पुस्तकें तो पढ़ ही डालीं, साथ में और बहुत कुछ पढ़ डाला, जैसे कि रेनाल्ड की 'मिस्ट्रीज ऑफ द कोर्ट ऑफ लंदन', मौलाना सज्जाद हुसैन की हास्य कृतियाँ, मिर्जा रुसवा और रतनशार के ढेरों किस्से।

लगभग चौदह वर्ष की उम्र में बालक धनपत के पिता का देहांत हो गया। घर में यूँ पहले से ही काफी गरीबी थी, फिर पिता की मृत्यु के पश्चात् तो मानो उसके सिर पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। रोजी-रोटी कमाने की चिंता सिर पर सवार हो गई। ट्यूशन कर-करके उन्होंने किसी प्रकार मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की। वे आगे पढ़ना तो चाहते थे, पर किसी कारणवश कॉलेज में प्रवेश न मिल सका।

धनपत तब पंद्रह-सोलह वर्ष के ही थे कि उनका विवाह कर दिया गया। उनके लिए यह विवाह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण रहा; लेकिन एक अच्छा संयोग यह जुड़ा कि सन् 1898 में मैट्रिक करने के बाद बनारस के पास चुनार के एक विद्यालय में शिक्षक की नौकरी मिल

गई। नौकरी करते हुए ही उन्होंने इंटर और फिर बी-ए- पास किया।

इनकी पहली पुस्तक 'सोज-ए-वतन' जब सरकार के द्वारा जब्त कर ली गई तो इन्होंने 'प्रेमचंद' नाम से लिखना शुरू कर दिया। 1916-17 में प्रेमचंदजी ने 'सेवासदन' लिखा। इस समय तक वह भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम से परिचित ही नहीं, उसके रंग में रँग चुके थे और उनकी लेखनी भारतीय सामाजिक समस्याओं पर बड़े वेग से चलने लगी थी। 'रंगभूमि' छपने पर इन्हें 'उपन्यास-सम्राट्' कहा जाने लगा था। प्रेमचंदजी ने अनेक उपन्यास लिखे, जिनमें-'कर्मभूमि' और 'गोदान' विश्वप्रसिद्ध उपन्यास माने जाते हैं।

प्रेमचंदजी काफी समय से पेट के अल्सर से बीमार थे, जिसके कारण उनका स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा था। इसी के चलते 8 अक्तूबर, 1936 को हिंदी का यह महान् लेखक हिंदी साहित्य जगत् से हमेशा के लिए विदा हो गया। लेकिन इस महान् लेखक की कहानियाँ आज भी इन्हें जीवित रखे हुए हैं।

-मुकेश 'नादान'

लाग-डाट

जो खू भगत और बेचन चौधरी में तीन पीढ़ियों से अदावत चली आती थी। कुछ डाँड़-मेंड़ का झगड़ा था। उनके परदादाओं में कई बार खून-खच्चर हुआ। बाप-दादाओं के समय से मुकदमेबाजी शुरू हुई। दोनों कई बार हाईकोर्ट तक गए। लड़कों के समय में संग्राम की भीषणता और भी बढ़ी, यहाँ तक कि दोनों ही अशक्त हो गए। पहले दोनों इसी गाँव में आधे-आधे के हिस्सेदार थे। अब उनके पास उस झगड़ने वाले खेत को छोड़कर एक अंगुल जमीन न थी। भूमि गई, धन गया, मान-मर्यादा गई, लेकिन वह विवाद ज्यों-का-त्यों बना रहा। हाईकार्ट के धुरंधर नीतिज्ञ एक मामूली सा झगड़ा तय न कर सके।

इन दोनों सज्जनों ने गाँव को दो विरोधी दलों में विभक्त कर दिया था। एक दल की भंग-बूटी चौधरी के द्वार पर छनती तो दूसरे दल के चरस-गाँजे के दम भगत के द्वार पर लगते थे। स्त्रियों और बालकों के भी दो दल हो गए थे। यहाँ तक कि दोनों सज्जनों के सामाजिक और धार्मिक विचारों में भी विभाजक रेखा खिंची हुई थी। चौधरी कपड़े पहने सत्तू खा लेते और भगत को ढोंगी कहते। भगत बिना कपड़े उतारे पानी भी न पीते और चौधरी को भ्रष्ट बतलाते। भगत सनातनधर्मी बने तो चौधरी ने आर्यसमाज का आश्रय लिया। जिस बजाज, पंसारी या कुंजड़े से चौधरी सौदे लेते, उसकी ओर भगतजी ताकना भी पाप समझते थे और भगतजी की हलवाई की मिठाइयाँ, उनके ग्वाले का दूध और तेली का तेल चौधरी के लिए त्याज्य थे। यहाँ तक कि उनके अरोग्यता के सिद्धांतों में भी भिन्नता थी। भगतजी वैद्यक के कायल थे, चौधरी यूनानी प्रथा के मानने वाले। दोनों चाहे रोग से मर जाते, पर अपने सिद्धांतों को न तोड़ते।

जब देश में राजनैतिक आंदोलन शुरू हुआ तो उसकी भनक उस गाँव में आ पहुँची। चौधरी ने आंदोलन का पक्ष लिया, भगत उनके विपक्षी हो गए। एक सज्जन ने आकर गाँव में किसान-सभा खोली। चौधरी उसमें शरीक हुए, भगत अलग रहे। जागृति और बढ़ी, स्वराज्य की चर्चा होने लगी। चौधरी स्वराज्यवादी हो गए, भगत ने राजभक्ति का पक्ष लिया। चौधरी का घर स्वराज्यवादियों का अड्डा बन गया, भगत का घर राजभक्तों का क्लब बन गया।